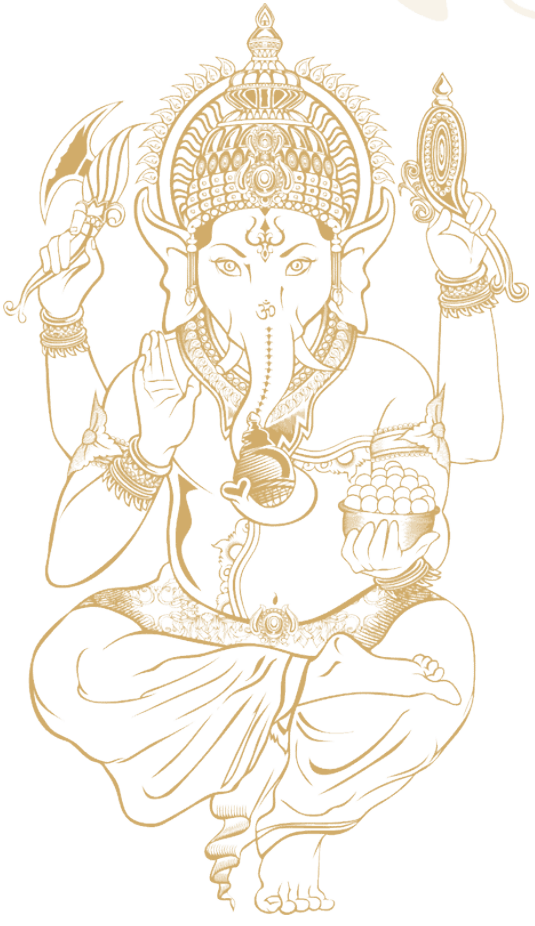

Mr.Samarth

16 Jun 2025

11:16 AM

Leeds

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119445001**

तिथि 16/06/2025 **समय** 11:16:00 **वार** सोमवार **स्थान** Leeds **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:48
अक्षांश 53:48:00 उत्तर **रेखांश** 01:34:00 पश्चिम **मध्य रेखांश** 00:00:00 पश्चिम **स्थानिक संस्कार** -01:06:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:49:29 घं
वेलान्तर	00:00:47 घं
सूर्योदय	04:34:47 घं
सूर्यास्त	21:39:23 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	आषाढ़
पक्ष	कृष्ण
तिथि	6
नक्षत्र	धनिष्ठा
योग	विष्कुम्भ
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गू-गूजरमल
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

मंगल 2वर्ष 8मा 29दि

मंगल

16/06/2025
15/03/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	16/06/2025
बुध	11/09/2025
केतु	07/02/2026
शुक्र	09/04/2027
सूर्य	15/08/2027
चन्द्र	15/03/2028

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 9मा 12दि

पिंगला

16/06/2025
30/03/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	16/06/2025
सिद्धा	28/09/2025
संकटा	09/03/2026
मंगला	30/03/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			13:30:37	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			01:18:51	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.81	कलत्र	पितृ	जन्म
चंद्र			01:26:05	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.16	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			05:16:01	सिंह	मघा	2	केतु	मंगल	मित्र राशि	1.16	पुत्र	भ्रातृ	साधक
बुध			19:54:42	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	मंगल	स्वराशि	1.20	आत्मा	ज्ञाति	सम्पत
गुरु		अ	07:16:36	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.34	भ्रातृ	धन	सम्पत
शुक्र			16:12:24	मेष	भरणी	1	शुक्र	सूर्य	सम राशि	1.12	अमात्य	कलत्र	वध
शनि			07:07:35	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	1.03	मातृ	आयु	क्षेम
राहु	व		28:04:51	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		28:04:51	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

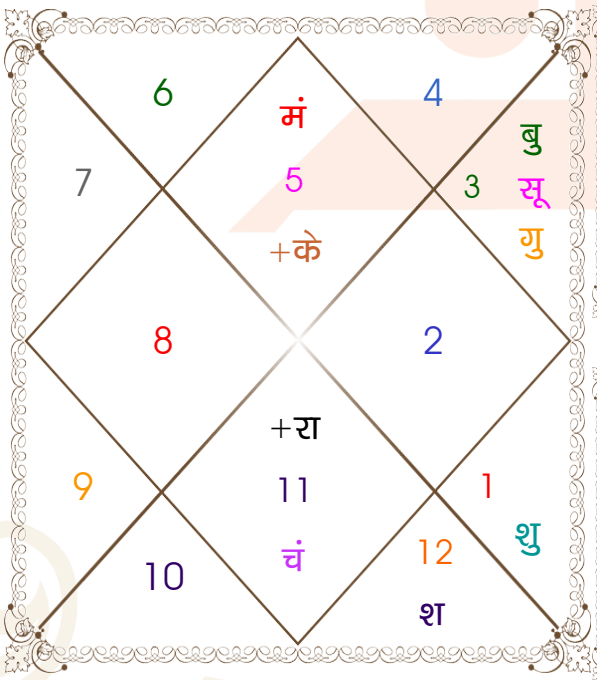

चन्द्र कुंडली

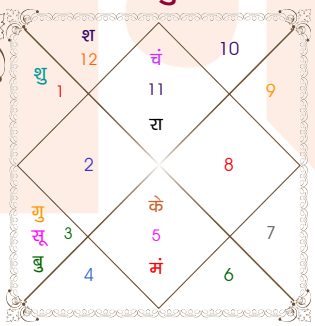

नवमांश कुंडली

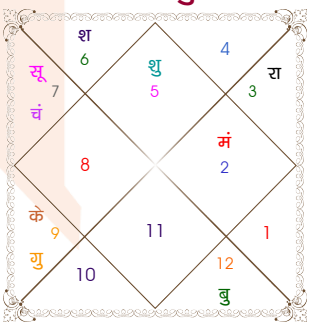

सर्वाष्टकवर्ग

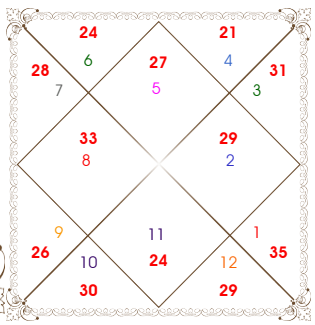

दशमांश कुंडली

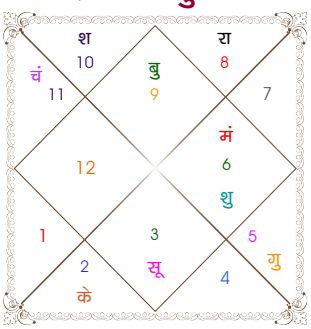

Dr.Pankaj R. Trivedi Shree Harsiddhi JYOTISH Katyalaya
137 Swagat Complex Kadodara Tal Palsana Distrct Surat Gujrat-394327
9925223039
harsiddhi.kdr@gmail.com

नक्षत्रफल

आप धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, योनि सिंह, नाड़ी मध्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गु" या "गू" अक्षर से होगा।

आप एक सदाचार से युक्त पुरूष होंगे तथा आपका चाल चलन भी उत्तम रहेगा जिसे समाज में अन्य लोग आपकी प्रशंसा करेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका अनुकरण भी करेंगे। आप एक व्यवहार कुशल व्यक्ति भी होंगे तथा अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही मधुर तथा अपनेपन का आभास करने वाला होगा। इस प्रकार आप अन्य व्यक्तियों के लिए सर्वदा आदर एवं सम्मान के पात्र रहेंगे एवं सभी लोगों पर आपका प्रभाव भी रहेगा। धन धान्य की आप में अधिकता रहेगी अतः एक धनाढ्हय पुरूष के रूप में आप जाने जाएंगे। आपमें शारीरिक बल पूर्ण मात्रा में रहेगा तथा स्वभाव से करूणा का भाव विद्यमान रहेगा अतः दीन दुःखियों पर आपकी विशेष कृपादृष्टि रहेगी। इस प्रवृति से आपकी दूर दूर तक ख्याति रहेगी साथ ही समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी रहेंगे एवं सभी लोगों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आपके मन में कभी भी नैराशा की भावना उत्पन्न नहीं होगी तथा हमेशा आशान्वित रहकर जीवन व्यतीत करेंगे। अतः मानसिक कष्टों की अनुभूति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे। साथ ही सर्व प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर आप इनका प्रसन्नता पूर्वक जीवन में उपभोग करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत शास्त्र के प्रति आपकी गहन रूचि रहेगी तथा इसमें आप प्रयत्नपूर्वक सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। आपको सम्पूर्ण कुल तथा परिवार में सम्मान तथा स्नेह प्राप्त होगा एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण रूपेण सम्मानित्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के स्वर्ण आभूषण तथा अन्य बहुमूल्य रत्नों से भी आप युक्त रहेंगे एवं किसी न किसी रूप में इसमें समृद्धि प्राप्त करेंगे। आप कई लोगों के मध्य एक प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति होंगे।

इनसे आपको पूर्ण आदर प्राप्त होगा एवं आपकी आज्ञा पालन करने के लिए ये सर्वदा तत्पर रहेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आपमें दनशीलता का भाव नेसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगा तथा समाज में दीन दुःखियों एवं जरूरतमन्द लोगों के प्रति आप इस प्रवृति का नित्यानुपालन करते रहेंगे। साथ ही वीरता एवं बहादुरी के गुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे तथा साहस एवं निर्भयता से अपनी समस्याओं का सामना करके उनका समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त धन के प्रति आपके मन में लालच का भाव रहेगा जिससे कभी कभी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा सहयोग उत्पन्न होंगी।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका ऊंची रहेगी तथा ललाट एवं मुखभाग विस्तृत होंगे साथ ही हाथ, पैर तथा कटिभाग भी स्थूलता से युक्त होंगे। आपके शरीर में कोमलता का ाभाव अल्प रहेगा फिर भी आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। समाज में आपके संबंध विस्तृत रहेंगे। उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं यदा कदा आप किसी का भी कहना नहीं मानेंगे इससे अन्य लोग आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में सामादृय श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही दूसरों की संतति के प्रति भी आपके मन में विशेष स्नेह की भावना भी रहेगी। आपके स्वभाव में कभी कभी दुष्टता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा एवं आलस का भी आप प्रदर्शन करेंगे। शिल्प विद्या या चित्रकारी के आप ज्ञाता होंगे तथा इस क्षेत्र में विशेष सफलता अर्जित करने में सफल हो सकेंगे। इसके अतिक्ति कभी कभी आप मानसिक

कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

उद्घोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में आपकी रूचि रहेगी तथा इनमें आप निपुणता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही नाना प्रकार के शास्त्रों का भी आपको ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में आपका सम्मान रहेगा। आप में हिंसक प्रवृतियों की न्यूनता रहेगी एवं स्वभाविक शान्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। एवं वे सभी आपसे भयभीत रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप अप्रत्यक्ष रूप से कठोर कार्यों को सम्पन्न करेंगे या उसमें अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही यात्रा एवं भ्रमण कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अपने अधिकांश समय को इसी पर व्यतीत करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। आप हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी अपने मन में रखेंगे एवं इसके लिए यत्नशील भी रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में प्रायः उतार चढ़ाव आते रहेंगे एवं इसमें विषमता बनी रहेगी कभी अत्याधिक मात्रा में धन प्रप्ति होगी तो कभी अति न्यून मात्रा में। इसके अतिरिक्त चन्दन के अनुलेपन तथा पुष्प सुगन्ध में भी आपकी रूचि रहेगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

समाज में आप एक श्रेष्ठविद्वान होंगे तथा सर्वत्र आपकी ख्याति रहेगी परन्तु अन्य विद्वान लोगों को आप उचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में सुशीलता का अभाव रहेगा जिससे आपके व्यवहार से अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे एवं इसमें आपके सम्मान तथा प्रभाव में भी न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आपको जीवन में सर्वत्र विजय तथा सफलता अर्जित होती रहेगी साथ ही आप एक सच्चरित्र पुरूष होंगे तथा आपका चरित्र अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेंगे। आप धन सम्पत्ति से प्रायः युक्त रहेंगे। गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा

तथा इनको हार्दिक सेवा करने के लिए आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा तथा अपनी जाति या वर्ग के लोगों के लिए जो भी श्रेष्ठ या लाभदायक कार्य होगा उसको आप पूर्ण करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे अतः बन्धुवर्ग के मध्य आप पूर्ण रूप से आदरणीय तथा सम्मानित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा इनका अनुपालन करते हुए प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपके गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक दृष्टिगोचर होगी एवं नसें भी शरीर से बाहर प्रदर्शित होती रहेगी। साथ ही महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे एवं उनकी सहायता एवं सहयोग के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आपके मन में दानशीलता की प्रवृति प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही अन्य जनों के उपकार संबंधी कार्यों को करने में भी आप प्रायः उद्यत एवं प्रयत्नशील रहेंगे। आपके मन में कृतज्ञता की भावना का भी समावेश रहेगा। साथ ही कई प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी सुन्दर होगी एवं बुद्धि सरलता से युक्त रहेगी एवं किसी भी प्रकार के प्रपंच या धोखे से आप विहीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन एवं विद्यार्जन करने के लिए आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। आप अपने सत्कार्यों के द्वारा तथा स्नेहशील व्यवहार से समाज में ख्याति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने बाहुबल से धनार्जन करेंगे तथा साहस एवं निर्भयता पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने वाली

होगी तथा आपके मन में दया एवं करूणा का भाव अल्प रूप से ही विद्यमान रहेगा परन्तु आप एक साहसी पुरूष होंगे। अतः आपके अधिकांश कार्य साहस एवं निर्भयता से ही सम्पन्न होगे। आप के स्वभाव में क्रोध की भी प्रवलता रहेगी तथा कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे।आप में विवाद की प्रवृति भी रहेगी एवं अन्य जनों से परस्पर विवाद प्रायः होता रहेगा। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप बलशाली रहेंगे।

जीवन में आप कभी कभी उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका शारीरिक सौन्दर्य मध्यम रहेगा साथ ही यदा कदा आप अपने संभाषण में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी धर्म के प्रति हार्दिक निष्ठा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा जीवन में आप यत्न पूर्वक इसका अनुपालन करते रहेंगे। आप प्रायः अच्छे कार्यों को करने के प्रति रूचिशील दौरान आपकी- इन कार्यों से अन्य सामाजिक जन भी लाभान्वित होंगे। आपमें सद्गुणों की भी प्रधानता रहेगी। अतः सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने कुल या परिवार की समृद्धि के लिये आप हमेशा चिन्तित रहेंगे एवं इसे पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का

भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गंडयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में चिन्ता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्णपादुका आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलेगी साथ

ही अशुभ फलों का प्रभाव खत्म होकर शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।